

सूरह तकासुर^[1] - 102



सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((तकासुर)) अर्थात: अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को जीवन के मूल उद्देश्य से अचेत रहने का कारण बताया गया है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में सावधान किया गया है कि जिस धन को तुम सब कुछ समझते हो और उसे अर्जित करने में अपने भविष्य से अचेत हो तुम्हें आँख बंद करते ही पता लग जायेगा कि मौत के उस पार क्या है।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि नरक को तुम मानो या न मानो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे। और तुम्हें उस का विश्वास हो जायेगा किन्तु वह समय कर्म का नहीं बल्कि हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें अल्लाह के प्रत्येक प्रदान का जवाब देना होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मग्न कर दिया।
2. यहाँ तक कि तुम कब्रिस्तान जा पहुँचे।^[2]

أَلْهَمَكُمُ التَّكَاثُرَ

حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ

- 1 इस सूरह का प्रसंग भी इस के मक्की होने का संकेत करता है।
- 2 (1-2) इन दोनों आयतों में उन को सावधान किया गया है जो संसारिक धन ही को सब कुछ समझते हैं और उसे अधिकाधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है कि: मौत के पार क्या होगा इसे सोचते ही नहीं। कुछ तो धन की देवी बना कर उसे पूजते हैं।

3. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।	كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝
4. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।	ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝
5. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते।) ^[1]	كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝
6. तुम नरक को अवश्य देखोगे।	لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝
7. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे।	ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝
8. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ गछ होगी। ^[2]	ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝

1 (3-5) इन आयतों में सावधान किया गया है कि मौत के पार क्या है? उन्हें आँख बन्द करते ही इस का ज्ञान हो जायेगा। यदि आज तुम्हें इस का विश्वास होता तो अपने भविष्य की ओर से निश्चिन्त न होते। और तुम पर धन प्राप्ति की धुन इतनी सवार न होती।

2 (6-8) इन आयतों में सूचित किया गया है कि तुम नरक के होने का विश्वास करो या न करो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उस को अपनी आँखों से देख लोगे। उस समय तुम्हें इस का पूरा विश्वास हो जायेगा। परन्तु वह दिन कर्म का नहीं हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें प्रत्येक अनुकम्पा (नेमत) के बारे में अल्लाह के सामने जवाब देही करनी होगी। (अहसनुल बयान)